Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

आतंकवादः एक वैश्विक समस्या

Mamta Rani*

Research Scholar, Department of Political Science, Baba Mastnath University, Rohtak, Haryana

शोध आलेख सार – *संयुक्त राष्ट्र संघ ने आज तक आतंकवाद को परिभाषित नहीं किया है। वर्तमान समय में आतंकवाद एक राष्ट्र व राज्य के दायरे तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा का वैश्विक खतरा बन चुका है। विश्व की शांति एवं सुरक्षा के लिए गैर-राष्ट्रीय कर्ता देश बहुत बड़ी चुनौती बन चुके हैं, लेकिन आज तक संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा आतंकवाद पर कोई निर्णय नहीं लिया गया है। सुरक्षा परिषद के द्वारा आतंकवाद के विरुद्ध निर्णय लेने का कारण कुछ देशों के द्वारा इस समस्या पर असहमति प्रकट की गई है। आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए किसी भी प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय कानून का निर्माण नहीं किया गया है। वर्तमान समय में कुछ पड़ोसी देश ऐसे हैं जो सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। आतंकवाद के अनेक कारण माने जाते हैं, जैसे- आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक कारण आदि। वैश्विक आतंकवाद के प्रभावी होने के दो प्रमुख कारण रहे हैं। पहला कारण अमेरिका की 'पश्चिमी एशिया नीति' के कारण और 'इजराइल को समर्थन' देने से आतंकवाद प्रभावी हुआ है।*

दूसरा कारण वर्ष 1979 कि ईरान की इस्लामी क्रांति के बाद आतंकवाद प्रभावी हुआ है। शीत युद्ध के समय बड़ी-बड़ी महाशक्तियोंने आतंकवाद का प्रयोग विदेश नीति के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया था। 11 सितंबर, 2001 तथा 13 दिसंबर, 2001 को किए गए आतंकवादी हमलों से भी आतंकवाद को बढ़ावा मिला है। भारत के मुंबई में ताज होटल पर 26 नवंबर, 2008 को किए गए हमले से आतंकवादी गतिविधियों को बल मिला है। वर्तमान समय में पाकिस्तान के द्वारा किए गए भारत के बालाकोट क्षेत्र में आतंकवादी हमले ने पूरे विश्व को हिलाकर रख दिया है।

आतंकवाद का यह मुद्दा भारत के प्रधानमंत्री 'नरेंद्र मोदी' जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में उठाया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवेशन के समय पर उपस्थिति पाई महाशक्तियों ने आतंकवाद के इस मुद्दे का स्वागत किया है। भविष्य में आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने पर सहयोग किया गया है। पांच महाशक्तियों की सहमति के बाद 1 मई, 2019 को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के द्वारा पाकिस्तानी चरमपंथी एवं जैश-ए-मोहम्मद के संस्थापक मोहम्मद मसूद अजहर अल्वी' को वैश्विक आतंकवादी घोषित किया गया है।

इस प्रकार से आतंकवाद की समस्या एक देश व राज्य की समस्या न होकर समस्त विश्व की एक भयंकर चुनौती बन गई है।

मुख्य शब्दः *आतंकवाद, वैश्विक, मानवाधिकार, मानवता आदि।*

----------X----------

आतंकवाद एक वैश्विक समस्या है। यह समस्या दिन-प्रतिदिन एक उग्र रूप धारण करती जा रही है। आतंकवाद का मतलब है- किसी संगठन के द्वारा आम नागरिकों की हत्या करना, विमान अपहरण करना, सामूहिक नरसंहार करना आदि। इसका उद्देश्य आम लोगों मन में मनोवैज्ञानिक भय उत्पन्न करना है। आतंकवादी हिंसा का मूल उद्देश्य एक निश्चित समुदाय की समस्या की तरफ, विश्व का ध्यान आकर्षित करना है। अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों का संचालन राष्ट्रीय स्वतंत्रता के नाम पर किया गया है। आजादी के बाद से ही भारत को पड़ोसी राज्यकृत आतंकी गतिविधियों का सामना करना पड़ रहा है। 1980 के दशक में भारत को पंजाब राज्य में 'खालिस्तान' की मांग के लिए आतंकी गतिविधियों का सामना करना पड़ा था। भारत को श्रीलंका समर्थित 'लिट्टे' तथा असम में 'उल्फा', कश्मीर में 'इस्लामिक आतंकवाद' की गतिविधियों का सामना करना पड़ा।

www.ignited.in

आतंकवाद के कारण

1. आर्थिक कारण:

आतंकवादी गतिविधियों में शामिल होने वाले अधिकतर लोग गरीब देशों से संबंधित थे। परंतु वर्ष 2005 में 'लंदन' में हुए बम विस्फोट में काफी संख्या में शिक्षित लोग शामिल पाए गए। आधुनिक युग में अत्यधिक शैक्षिक पृष्ठभूमि के लोग आतंकवादी घटनाओं से संबंधित है।

2. सांस्कृतिक कारण:

विश्वके कुछ समुदाय ऐसे हैं, जो अपने मूल्यों की रक्षा के लिए 'सशस्त्र संघर्ष' का सहारा लेते हैं। ऐसे समुदाय अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान कायम रखना चाहते हैं। वर्तमान में अनेक धार्मिक एवं नृजातीय संघर्ष होते रहते हैं।

3. धार्मिक कारण:

11 सितंबर 2001 के आतंकवादी हमले को 'इस्लामी आतंकवाद' भी कहा जाता है। आतंकवादी किसी एक धर्म से संबंधित नहीं होते हैं। उनका संबंध तो लगभग सभी धर्मों से जुड़ा होता है। विश्व के कुछ देश, विदेश नीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आतंकवाद का प्रयोग करते हैं। पाकिस्तान आतंकवाद का प्रयोग करने वाला पहला देश है। पाकिस्तान में आतंक के विरुद्ध युद्ध में अमेरिका ने सहयोग किया है। आतंकवादियों ने भारतीय संसद तथा कश्मीर विधानसभा को अपना निशाना बनाया है। धार्मिक स्थलों पर हमले किए गए। महिलाओं और बच्चों को जानबूझकर निशाना बनाया गया।

वर्तमान समय में अफगानिस्तान आतंकवाद का केंद्र बना हुआ है। इसको आरंभ करने का श्रेय अमेरिका को दिया जाता है। 11 सितंबर 2001 की घटना, 26 नवंबर 2008 की घटना के बाद आतंकवाद का अधिक संगठित रूप उभर कर सामने आने लगा। अलकायदा जैसे आतंकवादी संगठन इस समस्या का प्रमुख कारण है।

भारत पिछले तीन दशक से सीमा पार के आतंकवाद से प्रभावित है। पाकिस्तान के द्वारा आतंकवादियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। पठानकोट के आतंकवादी हमले, 2 जनवरी, 2016 में आई.एस.आई. का हाथ था।

जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा के द्वारा कश्मीर में आतंकवादियों को भेजा जाता है। अलकायदा अमेरिका, रूस, इजरायल व भारत को इस्लाम का शत्रु मानता है। इसलिए वे कश्मीर में आतंकवादियों का समर्थक है।

आतंकवाद एक वैश्विक घटना के रूप में बढ़ता जा रहा है। अनेक देशों के राष्ट्रीय आंदोलनकारी नेताओं द्वारा भी आतंकवादी गतिविधियों का प्रयोग किया गया है। 'साम्यवादी विचारधारा' के समर्थक भी आतंकवाद का प्रयोग करते हैं।

1970 के दशक में आतंकवाद का प्रयोग वायु सेवाओं का तीव्र विस्तार करने में, टेलीविजन, समाचार का व्यापक प्रसार करने तथा समान राजनीतिक एवं वैचारिक हितों के लिए भी इसका प्रयोग किया गया।

मीडिया का प्रचार भी आतंकवाद को जीवित रखने के लिए ऑक्सीजन का काम करता है। आतंकवादी मीडिया के द्वारा लोगों में मनोवैज्ञानिक भय उत्पन्न करते हैं।

21वीं सदी में साइबर आतंकवाद, नार्को आतंकवाद जैसी अवधारणाएं उभर कर आई है। वर्तमान समय में मोबाइल संसार की वैश्विक व्यवस्था, ई-मेल, सेलफ़ोन, ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम आदि ने आतंकवाद को वैश्विक बना दिया है।

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का समाधान:

वर्तमान समय में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद एक सांझा समस्या है। इस समस्या का समाधान वैश्विक स्तर परसांझा होना चाहिए। आतंकवाद से बचने के लिए सुरक्षा एजेंसियों के साथ-साथ सरकार को भी कार्य करने चाहिए। सभी देशों को आतंकवादी संगठनों के खिलाफ एक ठोस रणनीति तैयार करनी चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद की कड़े शब्दों में निंदा करनी चाहिए। आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले देशों का बहिष्कार करना चाहिए।

निष्कर्ष:

विश्व में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। वर्तमान समय में तकनीकी ज्ञान व सूचना प्रोद्योगिकी ने आतंकवादी संगठनों को काफी सहायता प्रदान की है। आतंकवाद से निपटने के लिए विश्व स्तर पर दीर्घकालिक रणनीति अपनानी आवश्यक है। अतः आतंकवाद की रोकथाम के लिए संपूर्ण विश्व को एकजुट होने की आवश्यकता है ताकि आतंकवाद को जड़ से समाप्त किया जा सके।

www.ignited.in

Mamta Rani*

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ॰ पुष्पेश पंत, "अंतर्राष्ट्रीय संबंध", मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ संख्या 507-509
2. डॉ॰ बी॰एल॰ फाडिया, "अंतर्राष्ट्रीय संगठन एवं अंतर्राष्ट्रीय कानून", साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ संख्या 197-200
3. ब्रजकिशोर शर्मा, "इंट्रोडक्शन टू द कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ़ इंडिया" पी॰एच॰आई॰ लथनग प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ संख्या 70-75
4. रामानंद गैरोला, "अंतर्राष्ट्रीय विधि एवं मानव अधिकार", आकाश बुक डिपो, बरेली, पृष्ठ संख्या 351-355
5. "सेज लाइब्रेरी ऑफ़ इंटरनेशनल रिलेशन" (2010), सेज पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 45-50
6. राजेश मिश्रा, "राजनीति विज्ञान एक समग्र अध्ययन", प्रकाशक ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ संख्या 355-378
7. सम-सामयिक घटना चक्र, वर्षिकांक 2019, पृष्ठ संख्या 33-35
8. www.gov.media.in
9. जनसत्ता अखबार, 2 मई, 2019, पृष्ठ संख्या 2-3
10. द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, फरवरी 2019, पृष्ठसंख्या 4-7

Corresponding Author

Mamta Rani*

Research Scholar, Department of Political Science, Baba Mastnath University, Rohtak, Haryana